पटसन की मिलें

१८२२. श्री वाल्मीकी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि इस समय भारतीय पटसन मिलों में कितनी विदेशी पूंजी लगी हुई है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : ५,७८,८७,००० रु० ।

बिजली के सामान का उद्योग

१८२३. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को बिजली के सामान के उद्योग के तैयार माल तथा कच्चे माल के लाने ले जाने की कठिनाइयों के बारे में कोई शिकायतें प्राप्त हुई है ;

(ख) यदि हां, तो उन का स्वरूप क्या है ; और

(ग) इन शिकायतों को दूर करने के लिये सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) तथा (ख). जी, हा । १९५६ के शुरू में इस मन्त्रालय को निर्माताओं की ये शिकायतें मिली थी कि बड़े आकार के ट्रासफार्मरो तथा केबुलो का रेल द्वारा परिवहन करने मे कठिनाइया होती है । इलैक्ट्रीकल स्टील शीट और स्टैम्पिग्स (कच्चे मालों) को बम्बई से बंगलौर क्षेत्र में भेजने की कठिनाइयो के बारे में भी कुछ शिकायतें आयी थी ।

(ग) हाल के महीनो में स्थिति काफी सुधर गयी है और बिजली के सामान के निर्माता आम तौर पर इस बात मे संतुष्ट है कि माल गाड़ी के डिब्बे अलाट करने के प्रार्थना पत्रों पर शीघ्रता से कार्यवाही की जाती है । बिजली के सामान के निर्माता जब भी कच्चे माल और तैयार माल को इधर से उधर लाने ले जाने के लिये सहायता के खास प्रार्थना करते हैं, तो उस पर रेलवे अधिकारियों से बातचीत की जाती है और प्रार्थी को सभी संभव सहायता दी जाती है ।

बच्चा-गाड़ियां

१८२४. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में बच्चा-गाड़ियां बनाने के कितने कारखाने हैं ;

(ख) इनका कुल उत्पादन कितना है ;

(ग) क्या बच्चा-गाड़ियां बनाने के लिये विदेशों से आयात किये गये पुर्जों का प्रयोग किया जाता है ; और

(घ) यदि हा, तो किस अनुपात में ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) लगभग २२ कारखाने हैं ।

(ख) मूल्य के हिसाब से २,६४,००० रु० का प्रतिवर्ष उत्पादन होता है ।

(ग) जी, नही ।

(घ) प्रश्न ही नही उठता ।

स्टीयरिक एसिड

१८२५. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) स्टीयरिक एसिड का उत्पादन बढ़ाने के लिये क्या कार्यवाही की गई है ;

(ख) इससे साबुन उद्योग को कितना लाभ पहुंचा है ; और

(ग) अखाद्य तेलों से चर्बी युक्त अम्ल पदार्थ तथा ग्लसरीन बनाने के बारे में अब तक क्या प्रगति हुई है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) स्टीयरिक एसिड का उत्पादन बढ़ाने के लिये निम्न कदम उठाये गये है :—

(१) इस उद्योग को तटकर सरक्षण प्रदान कर दिया गया है ।

(२) पुराने आयातको द्वारा स्टीयरिक एसिड के आयात पर रोक लगादी गयी है और वास्तविक उपयोक्ताओं को सीमित आधार पर आयात करने के लिये लाइसेंस दिये जाते हैं ।

(३) गन्ने कच्चे मालो जैसे ताड के तेल और चरबी का आयात करने की अब भी अनुमति दी जाती है ।

(४) स्टीयरिक एसिड बनाने के लिये आधुनिक मशीनों के आयात की अनुमति भी दी जाती है ।

(ख) स्टीयरिक एसिड उद्योग इस समय प्रत्यक्षरूप मे साबुन उद्योग से संबंधित नही है क्योकि वह केवल वनस्पति तेलो का ही प्रयोग कर रहा है ।

(ग) अखाद्य तेलो मे चर्बी युक्त अम्ल पदार्थ बनाने की संभावनाओ की जाच पडताल की जा रही है ।

नाइट्रो-सेलूलोज और पी० वी० सी० लेदर क्लाथ

१८२६. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश मे इस समय नाइट्रो-सेलूलोज और पी० वी० सी० लेदर क्लाथ का कुल कितना उत्पादन हो रहा है; और

(ख) इसकी देश में कितनी खपत है और विदेशों को कितना भेजा जाता है ।

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) तथा (ख). एक विवरण जिस में यह जानकारी दी गयी है, सभा के पटल पर रख दिया गया है । [देखिये परिशिष्ट ४, अनुबन्ध संख्या ८०]

पुस्तकों का आयात

१८२७. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत वर्ष विदेशों मे कितनी पुस्तकों का आयात हुआ; और

(ख) इस आयात के कारण भारत को कितनी विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ी ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) से (ख). कितनी संख्या में पुस्तकों का आयात हुआ, यह जानकारी उपलब्ध नहीं है क्योंकि किताबों के आयात के आकड़े परिमाण मे दिये जाते है । १९५६–५७ में १,१३,३४,००० रु० की ३६,०७१ हंडरवेट पुस्तके, मुद्रित सामग्री, और पैम्फलेटें आयात की गयी ।

मशीनी औजारों के कारखाने

१८२८. श्री रा० स० तिवारी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) मशीनी औजार बनाने के लिये कितने संगठित कारखाने इस समय चल रहे हैं और उनका राज्य-वार ब्यौरा क्या है ;

(ख) मशीनीं औजार बनाने की दृष्टि से कौन से राज्य आगे बढ़े हुए हैं और क्यों ; और

(ग) जो राज्य इस दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, वहां स्थिति सुधारने के लिये क्या किया जा रहा है ।